राफ़िज़ा के यहाँ क़ुरआन में परिवर्तन

تحريف القرآن عند الرافضة

< باللغة الهندية >

मुहम्मद सालेह अल-मुनज्जिद

محمد صالح المنجد

अनुवाद : अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

राफ़िज़ा के यहाँ क़ुरआन में परिवर्तन

प्रश्नः

मैं ने एक शीया सहयोगी से सुना है कि उनके यहाँ एक ऐसी सूरत है जो हमारे मुसहफ (कुरआन) में नहीं पाई जाती है, तो क्या यह बात सही है? इस सूरत का नाम सूरत ''अल–विलायत'' है।

उत्तरः

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह के लि योग्य है।

जहाँ तक ''सूरतुल वलायत'' का संबंध है तो शीया के कुछ विद्वानों और उनके इमामों ने उसके मौजूद होने को स्वीकार किया है, और उनमें से जिसने इसका इनकार किया है तो वह ऐसा तक़ियया के तौर पर करता है। जिसने इसके मौजूद होने का स्पष्ट रूप से वर्णन किया है उनमें से एक ''मिर्ज़ा हुसैन मुहम्मद तक़ी अन्नूरी अत्तबरसी'' – मृत्यु 1320 हि. – है। चंनाँचे उसने एक किताब लिखी है जिसमें उसने यह दावा किया है कि कुरआन में परिवर्तन किया गया है, और यह कि सहाबा ने उसमें से कुछ चीज़ें छुपा ली हैं, जिनमें सूरतुल–वलायत है। राफिज़ा ने उसका सम्मान करते हुए उसकी मृत्यु के बाद उसे ''नजफ'' में दफन किया था। तबरसी की यह किताब ईरान में 1298 हिज्री में मुद्रित हुई थी। उसके मुद्रण के समय उसके बारे में बहुत शोर मचा था। क्योंकि वे लोग चाहते थे कि कुरआन की प्रामाणिकता में संदेह का मामला केवल उनके विशेष लोगों में सीमित रहे और उनके

यहाँ विश्वस्त सैंकड़ों किताबों में बिखरा रहे, और यह कि उन सब को किसी एक किताब में न एकत्रित किया जाए। उसने अपनी किताब के आरंभ में कहा है :

यह एक अच्छी किताब और कुलीन पुस्तक है, जिसका नाम है : ''फसलुल खिताब फी इसबाति तहरीफि किताबि रब्बिल अरबाब'' (प्रभुओ के प्रभु की पुस्तक में परिवर्तन के सबूत के बारे में निर्णायक बात)'' . . . उसने ऐसी सूरतें और आयतें उल्लेख की हैं जिनके बारे में उसका दावा है कि सहाबा ने उन्हें मिटा दिया और छुपा लिया है, और उसी में से ''सूरतुल वलायत'' भी है। जिसके छंद उनके यहाँ – जैसाकि इस किताब में उद्धृत है – इस प्रकार हैं :

"يا أيها الذين آمنوا آمنوا بالنبي والولي الذين بعثناهما يهديانكم إلى الصراط المستقيم

نبي وولي بعضهما من بعض وأنا العليم الخبير ... "

(ऐ ईमान वालो! तुम नबी और वली पर ईमान लाओ जिन्हें हमने भेजा है, वे दोनों तुम्हे सीधे रास्ते का मार्गदर्शन करते हैं, नबी और वली एक दूसरे का हिस्सा हैं और मैं सब कुछ जाननेवाला सबसे अवगत हूँ ....''

और उनके यहाँ एक दूसरी सूरत भी है जिसका नाम सूरतुन–नूरैन है :

" يأيها الذين آمَنوا آمِنوا بالنورين أنزلناهما يتلوان عليكم آياتي ويحذرانكم عذاب يوم

عظيم . بعضهما من بعض وأنا السميع العليم . إن الذين يوفون بعهد الله ورسوله في آيات

لهم جنات النعيم . والذين كفروا من بعد ما آمنوا بنقضهم ميثاقهم وما عاهدهم الرسول

عليه يقذفون في الجحيم . ظلموا أنفسهم وعصوا وصية الرسول أولئك يسقون من حميم

...

"ऐ ईमान वालो! तुम ईमान लाओ उन दोनों नूर (प्रकाश) पर जिन्हें हमने उतारा है, वे दोनों तुम्हारे ऊपर मेरी आयतें तिलावत करते हैं और वे तुम्हें एक महान दिन के अज़ाब (यातना) से डराते हैं। वे दोनों एक दूसरे का हिस्सा हैं और मैं सब कुछ सुनने वाला जानने वाला हूँ। निःसंदेह जो लोग आयात में अल्लाह और उसके रसूल की प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं उनके लिए नेमतों वाली जन्नतें हैं। और जिन लोगों ने ईमान लाने के बाद अपनी प्रतिज्ञा को और जिसपर रसूल ने उनसे वादा लिया था, उसे तोड़कर कुफ्र किया वे नरक में झोंके जायेंगे। उन्हों ने अपने ऊपर अत्याचार किया और रसूल की वसीयत की अवहेलना की, उन्हें गरम पानी पीने के लिए दिया जायेगा ...

इसके अलावा अन्य अनर्गल बातें।

प्रोफेसर मुहम्मद अली सऊदी – जो कि मिस्र में न्याय मंत्रालय के वरिष्ठ विशेषज्ञ थे – प्राच्य "ब्रायन" के पास एक ईरानी मुसहफ की पांडुलिपि से अवगत हुए, जिससे उन्हों ने इस सूरत की टेलीग्राफ के द्वारा प्रतिलिपि तैयार की है, उसकी अरबी लाइनों के ऊपर ईरानी भषा में उसका अनुवाद लिखा है।

जिस तरह तबरसी ने अपनी किताब "फसलुल खिताब फी इसबाति तहरीफि किताबि रब्बिल अरबाब" में इसे साबित किया है, उसी तरह यह उनकी किताब "दबिस्तान मज़ाहिब" में भी साबित है, जिसे ईरानी भाषा में मोहसिन फानी कश्मीरी ने लिखी है, वह ईरान में कई बार छप चुकी है, और उसी से अल्लाह पर गढ़ी हुइ यह सूरत प्राच्य "नोलडिका" ने अपनी किताब "तारीखुल मसाहिफ" (2/102) में उद्धृत किया है, और उसे " **फ्रेंच एशियाई जर्नल** " ने 1842 (पृष्ठ 431–439) मे प्रकाशित किया है।

इसी तरह इसे मिर्ज़ा हबीबुल्लाह अल–हाशिमी अल–खोई ने अपनी किताब "मिनहाजुल बराआ फी शरह नहजिल बलागा" (2/217) में और मुहम्मद बाक़िर

अल–मजलिसी ने फारसी भाषा में अपनी किताब ''तज़किरतुल अईम्मा'' (पृष्ठ 19, 20) प्रकाशन मौलाना–ईरान में उल्लेख किया है।

देखिए : मुहिब्बुददीन अल–खतीब की किताब : अल–खुतूत अल–अरीज़ा लिल–उसुस अल्लती क़ामा अलैहा दीनुश्शीया''

उनका यह दावा अल्लाह तआला के इस कथन :

﴿ إنا نحن نزلنا الذكر وإنا له لحافظون ﴾ [الحجر:9]

''निःसंदेह हमने ही इस कुरआन को उतारा है और हम ही इसकी रक्षा करनेवाले हैं।'' (सूरतुल हिज्र : 9)

को झुठलाना है, इसीलिए मुसलमानों की इस बात पर सर्वसम्मित है कि जिसने यह दावा किया कि कुरआन में कोई परिवर्तन और हेर–फेर है, तो वह काफिर (नास्तिक) है।

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमियया ने फरमाया :

इसी तरह उन लोगों का भी हुक्म है जिनका इनमें से यह दावा है कि कुरआन से कुछ आयतें कम कर दी गई हैं और छुपा ली गई हैं, या उसका यह दावा है कि उसकी कुछ गुप्त व्याख्याए हैं जो धर्मसंगत कार्यों को समाप्त कर देती हैं। इनको क़रामिता और बातिनियया कहा जाता है, और उन्हीं में से तनासुखिययया भी हैं, इन लोगों के कुफ्र में कोई मतभेद नहीं है।

''अस्सारिमुल मस्लूल'' (3/1108–1110)

इब्ने हज़्म कहते हैं :

यह कहना कि कुरआन के दोनों पट्टियों के बीच परिवर्तन हुआ है : स्पष्ट कुफ्र है और अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाना है।

''अल–फिसल फिल–अहवा वल–मिल वन्निहल'' (4/139).

और अल्लाह तआला ही सबसे अधिक ज्ञान रखता है।

इस्लाम प्रश्न और उत्तर